झारखण्ड के सामाजिक एवं राजनीतिक संदर्भ में बिनोद बिहारी महतो का योगदान

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद

के समाज विज्ञान संकाय के अन्तर्गत

राजनीति विज्ञान विभाग

में पीएच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–प्रस्ताव

शोध पर्यवेक्षिका

डॉ० सुमिता तिवारी

सहायक प्राध्यापक,

विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग

एस०एस०एल०एन०टी० महिला महाविद्यालय,

बि०बि०म०को०वि०, धनबाद (झारखण्ड)

मो0 : 9431189602

शोधप्रज्ञ

नागेश्वर प्रजापति

एम०ए०,

राजनीति विज्ञान विभाग

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल

विश्वविद्यालय, धनबाद (झारखण्ड)

मो0 : 8540812664

Email ID :

nageshwarprajapati7000@gmail.com

झारखण्ड के सामाजिक एवं राजनीतिक संदर्भ में बिनोद बिहारी महतो का योगदान

प्रस्तावना :

झारखण्ड भारत का एक ऐसा प्रदेश है जो भारतीय सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के प्राचीन काल से ही अपनी एक विशिष्ट पहचान रखता है। ब्रिटिश उपनिवेशवाद के दौर से ही यहाँ शोषण की एक परंपरा रही है, यह भी एक कटु यथार्थ है। अंग्रेजों के साथ देशी महाजनों, जमींदारों ने भी यहाँ के लोगों, उनके जर, जमीन और जंगल का शोषण किया जो आजादी के बाद भी चलता रहा है। यहाँ के इतिहास की यह भी एक सत्यता है कि यहाँ के लोग दोहरी संघर्ष करते रहे, एक ओर ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विरुद्ध, दूसरी ओर आंतरिक उपनिवेशवाद, यानी महाजनों, बाहरी ठेकेदारों और जमींदारों के विरुद्ध और इसी संघर्ष का परिणाम है कि 21वीं सदी के पहले दशक में झारखण्ड एक अलग राज्य के रूप में अस्तित्व में आया और यह ऐतिहासिक सफलता यहाँ की जनजातियों और सदानों के सम्मिलित संघर्ष से प्राप्त हुई।

इस पूरे संघर्ष में बिनोद बिहारी महतो की ऐतिहासिक भूमिका रही है– न सिर्फ आंदोलनकारी के रूप में बल्कि एक सिद्धांतकार के रूप में भी। आंतरिक उपनिवेशवाद का मुहावरा उन्हीं की देन है जो पूरे संघर्ष में मौलिक विचार के रूप में काम करता रहा। उनकी एक यह भी देन है कि उन्होंने झारखण्ड में सामाजिक–सांस्कृतिक जागरण की शुरूआत की। किंतु एक विडंबना ही कही जाएगी कि झारखण्ड आंदोलन को लेकर अनेक शोध–कार्य और स्वतंत्र लेखन हुए हैं, लेकिन बिनोद बिहारी महतो पर अध्येताओं, अनुसंधानकर्ताओं का बहुत कम ध्यान गया है। वास्तव में इनके बारे में जाने बिना न तो झारखण्ड आंदोलन को सही ढंग से समझा जा सकता है और न ही यहाँ की सामाजिक, सांस्कृतिक संरचना और विकास की प्रक्रिया को। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर ही इनपर शोध–कार्य करने का निर्णय लिया गया है।

शोध–समस्या :

झारखण्ड को अलग राज्य बने लगभग बीस वर्ष हो चुके हैं फिर भी यहाँ की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थितियां संतोषजनक नहीं दिखलाई पड़तीं। झारखंड आन्दोलन को लेकर कई शोध–कार्य हो चुके हैं लेकिन उन सब पर दृष्टि डाली जाय तो उनमें कुछ स्तरों पर समानता नजर आती है। जैसे अधिकतर शोध–कार्य ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को केंद्र में रखकर किये गए, दूसरी बात यह दिखलाई देती है कि झारखंड आन्दोलन के उद्भव और विकास का मूल्यांकन भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के परिप्रेक्ष्य में ही प्रायः किया गया है। इसमें संदेह नहीं कि राष्ट्रीय आन्दोलन में झारखण्ड की भूमिका को सामने लाना निश्चय ही एक आवश्यक और सराहनीय कार्य है क्योंकि एक स्वतंत्र राष्ट्र के झंडे तले ही विभिन्न राज्य, जातीय, सांस्कृतिक और विविधतापूर्ण भाषिक–नस्ली अस्मिताओं की पहचान की समस्या का अध्ययन किया जा सकता है तभी समग्र रूप में उसकी व्यापक पहचान निर्धारित करना संभव हो सकता है। एक राष्ट्र के विचार के अंतर्गत ही उसकी विविध अस्मिताओं का विचार रूप लेता है। किन्तु इसी के साथ यह भी ध्यान में रखना जरुरी है कि राष्ट्र के विचार में पहचान की समस्याओं का विलय नहीं हो जाता है। राष्ट्र विविध अस्मिताओं का संघटन होता है किन्तु इस संघटन के कारण छोटी अस्मितायें एक व्यापक अस्मिता, अर्थात राष्ट्रीय अस्मिता के भीतर अपना विलय नहीं कर देतीं। उनकी यह मान्यता बिलकुल सही और वैज्ञानिक है क्योंकि बेशक झारखंड के बहुत सारे सपूतों ने देश की आजादी के लिए लाठियां खाईं, जेल गए, शहादत दी लेकिन इन सबके बावजूद उनके सामने झारखण्ड के सामाजिक–आर्थिक विकास की चिंता भी बनी हुई थी जो राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ ही बलवती होती जा रही थी। इसीलिए झारखण्ड को एक अलग राज्य बनाने का स्वप्न स्वतंत्र भारत के लिए आन्दोलन के साथ ही रूप लेने लगता

है। स्वतंत्रता के बाद यह प्रश्न दृढ़ता के साथ उठा और अलग झारखंड के लिए विधिवत संघर्ष हेतु बाकायदा राजनीतिक दल बने। इसके पहले झारखंड की समस्याओं को लेकर अलग–अलग आंदोलनों, विद्रोहों की एक लंबी श्रृंखला इतिहास में मौजूद है, भले ही उस दौर में अलग राज्य की स्पष्ट कल्पना नहीं थी। ये विद्रोह अंग्रेजों और उनके द्वारा पोषित जमींदारों, महाजनों के खिलाफ थे। तमाड़ विद्रोह, भूमिज विद्रोह, हो विद्रोह, कोल विद्रोह, संथाल विद्रोह एवं बिरसा मुंडा का विद्रोह– यानि एक लंबी श्रृंखला है जो अपने जर, जंगल और संस्कृति की रक्षा के लिए किये गए और इन सबका एक सम्मिलित रूप भारतीय स्वतंत्रता के बाद अलग झारखंड राज्य की मांग के बड़े आन्दोलन के रूप में सामने आया। आदिवासी महासभा नाम से जो संगठन बना, जयपाल सिंह मुंडा को उसका नेतृत्व मिला और इसकी भूमिका आंदोलनों की इस पूरी श्रृंखला में ऐतिहासिक मानी जाती है। जयपाल सिंह के बाद कई संगठन सामने आये, किन्तु निर्णायक लड़ाई लड़ने में इनकी भूमिका बहुत महत्वपूर्ण नहीं रही। झारखंड आन्दोलन के उत्तर दौर में निर्णायक आन्दोलन की शुरुआत शिबू सोरेन, ए० के० राय, बिनोद बिहारी महतो जैसे नेताओं के सामाजिक–राजनीतिक आन्दोलन से होती है। इनमें बिनोद बिहारी महतो ने न सिर्फ आदिवासियों–मूलवासियों के हक की लड़ाई शुरू की बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी सुधार आंदोलनों की शुरुआत की। इनका आन्दोलन आदिवासी–मूलवासी समाज में एक नए जागरण का आन्दोलन कहा जाय तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

शोध का उद्देश्य :

i) प्रस्तावित शोध–कार्य का उद्देश्य बिनोद बिहारी महतो के सम्पूर्ण जीवन संघर्ष एवं झारखण्ड सामाजिक–सांस्कृतिक जागरण के अग्रदूत के रूप में उनका मूल्यांकन करना।

ii) बिनोद बिहारी महतो द्वारा किया गया सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक सुधार पर प्रकाश डालना।

iii) बिनोद बिहारी महतो द्वारा शुरू की गई आदिवासियों तथा मुलवासियों की हक की लड़ाई पर प्रकाश डालना तथा कुडमी समुदाय की सांस्कृतिक पहचान के लिए संघर्ष करना।

iv) झारखण्ड राज्य के निर्माण में बिनोद बिहारी महतो के योगदान पर प्रकाश डालना।

v) प्रस्तावित शोध कार्य का अन्य प्रमुख उद्देश्य झारखण्ड आंदोलन के एक उपेक्षित पक्ष को सामने लाना।

शोध परिकल्पना :

इस शोध–कार्य की योजना के पीछे हमारी प्रमुख परिकल्पना है–

i) बिनोद बिहारी महतो झारखंड में जागरण के प्रतिनिधि व्यक्तित्व थे।

ii) इन्होंने सामाजिक–सांस्कृतिक तथा शैक्षिक सुधार की आधारशिला रखी।

iii) बिनोद बिहारी महतो ने आदिवासियों और मूलवासियों, खास तौर से कुडमी समुदाय के आधार तथा उनकी सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखने के लिए व्यापक प्रयास किये।

iv) बिनोद बिहारी महतो ने झारखंड राज्य की स्थापना के लिए निर्णायक संघर्ष की शुरुआत की।

v) इन पर प्रस्तावित शोध–कार्य से झारखंड आन्दोलन का एक उपेक्षित पक्ष सामने आएगा।

शोध की प्रासंगिकता और महत्व :

बिनोद बिहारी महतो पर शोध करना कई दृष्टियों से प्रासंगिक ही नहीं, अपितु एक स्वतंत्र राज्य के रूप में झारखंड के उदय के पीछे के ऐतिहासिक संघर्षों की सुदीर्घ परंपरा को समझने के लिए भी आवश्यक है। कोई भी बड़ा आंदोलन लंबे संघर्षों के बाद सफलता में परिणत होता है तब उस सफलता की प्रासंगिकता सिद्ध तभी होती है जब उस आंदोलन को लेकर पाले गए सपने यथार्थ में परिणत हों। झारखंड आंदोलन झारखंड की सांस्कृतिक, भाषाई अस्मिता की लड़ाई नहीं थी बल्कि यह आर्थिक बदहाली, विकास की आकांक्षा की लड़ाई भी थी और यह उस पूरे तंत्र के खिलाफ थी जो ब्रिटिश भारत से लेकर स्वतंत्र भारत तक यहां की आर्थिक संपदा के दोहन और आदिवासी—मूलवासी समुदाय की अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संरचना को छिन्न—भिन्न करने की कोशिश करती रही थी। एक प्रकार के आंतरिक उपनिवेशवाद झारखंड में अपने एजेंडे पर काम करता रहा। झारखंड आंदोलन इसी से मुक्ति के सपने के साथ शुरू हुआ था और इस संघर्ष में बिनोद बिहारी महतो की ऐतिहासिक भूमिका रही। लंबे संघर्ष के बाद जब नई सदी में अलग राज्य के रूप में यह अस्तित्व में आया तो ऐसा लगा कि अब सारे सपने पूरे होंगे, राज्य में खुशहाली आ जाएगी। इसमें शक नहीं कि अलग राज्य बनने के बाद यहां के नागरिकों के जीवन में परिवर्तन आया है, लेकिन इसके बाद भी कई समस्याएं अभी भी बनी हुई हैं, मसलन झारखंड के जंगल और खनिज संपदा अभी भी देशी विदेशी पूंजीपतियों की लूट से मुक्त नहीं हुई है। यहां का समाज अनेक जातियों, भाषा समूहों और धर्मों का मिला—जुला रूप है और इन सबके प्रयासों से ही झारखंड की पहचान है तथा आंदोलन की सफलता में भी सबका योगदान है। इसको समझे बिना न तो झारखंड की राजनीति को समझा जा सकता है न ही इसकी समकालीन समस्याओं को।

बिनोद बिहारी महतो पर शोध करना उपर्युक्त प्रसंग में बहुत महत्व का कार्य साबित होगा। झारखंड की पहचान आदिवासी और उन गैर आदिवासी जातियों से मिलकर बनती है जो उन्हीं के समान मूलवासी हैं। बिनोद बिहारी महतो कुडमी जाति के थे जो गैर आदिवासी, मगर मूलवासी मानी जाती है। झारखंड आंदोलन में श्री महतो की ऐतिहासिक भूमिका रही है। इसके अलावा उनकी पहचान अपनी जाति के बीच जागरण के अग्रदूत के रूप में भी रही है। इसके अलावा उन्होंने जो समाज सुधार और शिक्षा के प्रसार के लिए कार्य किए उनसे पूरे झारखंडी समाज को प्रेरणा मिली। इन पर शोध–कार्य करने से लोगों को जानकारी मिलेगी कि आज झारखंड को देश की मुख्यधारा में लाने के लिए उनकी क्या देन रही है। साथ ही नई पीढ़ी को अपने पूर्वजों के ऐतिहासिक अवदान के बारे में भी जानकारी मिलेगी जिसके अभाव में वर्तमान और भविष्य के विकास की राहें कठिन होंगी। यही इस शोध का महत्व है और इसीलिए यह समकालीन और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रासंगिक सिद्ध होगी।

शोध प्रश्न :

यह शोध–कार्य मुख्य रूप से निम्नांकित प्रश्नों को ध्यान में रखकर पूरा किया जाएगा–

1. एक प्रदेश के रूप में झारखंड की ऐतिहासिक पहचान और स्वरूप क्या रही है?
2. बिनोद बिहारी महतो ने सामाजिक–सांस्कृतिक जागरण के लिए क्या प्रयास किए और समाज सुधार के क्षेत्र में किए गए उनके कार्यों का क्या महत्व रहा है ?
3. समाज के दबे–कुचले वर्गों के लिए उन्होंने किस प्रकार संघर्ष किए ?
4. स्वतंत्र झारखंड राज्य के निर्माण के लिए होने वाले आंदोलन में उनकी क्या भूमिका रही ?
5. झारखंड के सामाजिक–राजनीतिक इतिहास में उनका क्या महत्व है ?

इन्हीं प्रश्नों पर इस पूरे शोध–कार्य की रूपरेखा बनाई गई है।

उपलब्ध साहित्य की समीक्षा :

झारखण्ड के सामाजिक एवं राजनीतिक संदर्भ में बिनोद बिहारी महतो का योगदान के संबंध में कुछ ही साहित्य उपलब्ध हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं–

(**महतो,** 2002, पृष्ठ संख्या–11 से 104)[1] में इस शोध–कार्य के लिए विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसमें बिनोद बिहारी महतो के जीवन व्यक्तित्व और सामाजिक–राजनीतिक परिवर्तन के लिए किए गए कार्यों के विस्तृत एवं प्रामाणिक तथ्यों के विवरण हैं। विदित हो कि श्री राजकिशोर महतो स्वयं झारखण्ड के प्रसिद्ध राजनीतिक व्यक्तित्व रहे हैं और बिनोद बिहारी महतो के पुत्र हैं। इन्होंने उनके जीवन संघर्षों एवं राजनीतिक सफर को बहुत करीब से देखा है और प्रारंभिक राजनीतिक शिक्षा उन्हें अपने पिता से ही मिली। इसलिए इन्होंने इस पुस्तक में उनके व्यक्तिगत जीवन एवं सामाजिक, राजनीतिक कार्यों के जो विवरण प्रस्तुत किये हैं तथा उनका जो मूल्यांकन किया है उसमें बहुत हद तक प्रामाणिकता पाई जाती है।

इस प्रस्तावित शोध–कार्य के लिए सहायक पुस्तकों में (**डॉ० वीरोत्तम**, 2017, पृष्ठ संख्या–397–402)[2] तक की सामग्री प्रत्यक्ष रूप से मेरे शोध से संबंधित है। इसके अलावा पुस्तक में जो अन्य अध्याय हैं, शोध कार्य के दौरान आवश्यकतानुसार सहायता ली जाएगी। क्योंकि उनकी पुस्तक में झारखंड की पूरी ऐतिहासिक विकास यात्रा के विवरण दिये गए हैं। इसमें उन्होंने सबसे पहले झारखंड की भौगोलिक संरचना और स्थिति का वर्णन किया है। इसके बाद प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक के पूरे ऐतिहासिक विवरण हैं। झारखंड आंदोलन पर इसमें एक पूरा अध्याय शामिल है। इसके अलावा झारखंड की पूरी प्रशासकीय संरचना का भी विस्तृत और प्रामाणिक खाका प्रस्तुत करेंगे। इसमें जनजातियों की आदिम प्रशासकीय व्यवस्था का भी वर्णन है। अंत में

झारखंडी सभ्यता, संस्कृति और आर्थिक जीवन पर भी पर्याप्त सामग्री दी गई है।

(**रणेन्द्र एवं पाल,** 2008, पृ० 01 से 565)[3] के द्वारा संपादित पुस्तक चार खंडों में प्रकाशित है जिसमें डॉ० बी० पी० केसरी, पृष्ठ संख्या 18—33 तथा 173—181 एवं हेमंत, पृष्ठ संख्या 263—278 के आलेख को शोध के दौरान विशेष रूप से उपयोग में लाए जाएँगे। इसमें झारखंड के इतिहास, संस्कृति, आर्थिक संरचना और विभिन्न आंदोलनों पर विस्तार से विचार किया गया है और इसके अन्य लेखकों में स्वयं संपादक, डॉ० अशोक कुमार सेन, रोज केरकेट्टा, शंकर प्रसाद, डॉ० रमेश शरण, डॉ० वी० एन० दिनेश, डॉ० पुरुषोत्तम कुमार, डॉ० उमेशचन्द्र द्विवेदी, मैथ्यू अरिपरम्पिल, डॉ० अमर कुमार सिंह, जेरोम जेराल्ड कुजूर, सुनील मिंज, ए०के० राय आदि बड़े विशेषज्ञों के आलेख हैं जिनका जरूरत पड़ने पर शोध में उपयोग किया जायेगा।

इसके चारों खंडों में झारखंड के इतिहास, संस्कृति और सभ्यता, आर्थिक संरचना, आदिम जीवन, जंगल, जमीन, जल, पहाड़ आदि की यहां के आदिम जीवन में भूमिका और महत्व विभिन्न आंदोलनों और अलग झारखंड के सपने से लेकर परिणाम के साथ—साथ वर्तमान की चुनौतियों पर भी पर्याप्त सामग्री दी गई है।

(**डॉ० सिंह,** 2002—03, पृष्ठ संख्या 15 से 118)[4] की पुस्तक में उस दौर की राजनीतिक गतिविधियों के ब्योरे हैं, मगर इसकी न्यूनता यह है कि इसमें श्री महतो के नाम तक का उल्लेख नहीं है। फिर भी झारखंड मुक्ति मोर्चा के गठन से संबंधित काफी सामग्री इसमें उपलब्ध है।

(**हेमंत,** 2001, पृष्ठ संख्या—43—61)[5] की पुस्तक में झारखंड आंदोलन के विभिन्न चरणों पर काफी सामग्री है और इसमें श्री महतो का उल्लेख है, हालांकि इनकी भूमिका के प्रति इसमें भी कुछ उपेक्षा दिखलाई देती है।

(**डॉ० केसरी,** 1990, पृष्ठ संख्या–24–39)[6] की पुस्तक में झारखंड की सभ्यता, संस्कृति, ऐतिहासिक तथ्यों के साथ–साथ अन्य सूचनाओं का भी विवेचन–विश्लेषण किया गया है। यह पुस्तक भी बहुत महत्वपूर्ण साबित होगी।

इस प्रकार उपर्युक्त विषय के संदर्भ में काफी अध्ययन हुआ है लेकिन प्रस्तावित विषय पर अभी तक शोध–कार्य नहीं हुआ है। प्रस्तावित शोध कार्य का प्रमुख उद्देश्य है झारखण्ड आंदोलन के एक उपेक्षित पक्ष पर प्रकाश डालना।

शोध पद्धति एवं स्रोत :

इस प्रस्तावित शोध–कार्य में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों स्रोतों का प्रयोग किया जायेगा। प्राथमिक स्रोतों से एकत्र की गई सामग्री का बिंदुवार विश्लेषण करते हुए सहायक ग्रंथों की सहायता से उनकी व्याख्या की जायेगी और तद्नुसार निष्कर्ष प्रस्तुत किये जायेंगे। इस प्रकार यह प्रस्तावित शोध–कार्य व्याख्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित होगा। स्रोत इस प्रकार हैं –

प्राथमिक स्रोत : प्राथमिक स्रोतों में बिनोद बिहारी महतो के नजदीकी सहयोगियों, परिवारजों एवं मित्रों के प्रकाशित साक्षात्कार शामिल हैं। शोध–कार्य के दौरान भी आवश्यकतानुसार संबंधित व्यक्तियों के साक्षात्कार लिये जायेंगे, वे भी प्राथमिक स्रोत में शामिल होंगे तथा इसमें असंरचित प्रश्नावली का भी उपयोग किया जाएगा। पत्र–पत्रिकाओं में बिखरी सामग्रियों को एकत्र करके भी उनका उपयोग किया जायेगा।

द्वितीयक स्रोत : द्वितीयक स्रोत के रूप में विभिन्न विद्वानों, पत्रकारों द्वारा प्रकाशित पुस्तकों का उपयोग किया जायेगा जिनमें प्रमुख ग्रंथों की चर्चा उपलब्ध शोध–साहित्य में की गई है।

शोध–कार्य की संरचना :

यह प्रस्तावित शोध–कार्य प्रस्तावना और उपसंहार के अतिरिक्त पांच अध्यायों में विभाजित होगा। प्रथम अध्याय में झारखण्ड प्रदेश की ऐतिहासिकता का परिचय दिया जाएगा। इसमें इस प्रदेश के प्राचीन नाम, जातियों के आगमन और भौगोलिक विशिष्टताओं पर चर्चा की जाएगी। द्वितीय अध्याय में इनका जीवन–परिचय होगा। इसमें उनके जन्म संबंधी ब्योरे, शिक्षा–दीक्षा एवं सामाजिक कार्यों में रूचि तथा उनके चिंतन की दिशा आदि का परिचय दिया जाएगा साथ ही उनके उस सामाजिक परिवेश और सांस्कृतिक विशिष्टताओं का भी परिचय दिया जाएगा जिनका उनके सामाजिक–सांस्कृतिक संघर्षों से संबंध है। तृतीय अध्याय में बिनोद बिहारी महतो के सामाजिक–सांस्कृतिक अवदानों की चर्चा होगी। इसमें उनके द्वारा सामाजिक जागरण के लिए संगठन–निर्माण, कुरीतियों, कुप्रथाओं आदि के विरुद्ध जन–जागरण एवं संघर्षों के बारे में विवरण दिए जाएंगे। सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में जो कार्य उन्होंने किये उन सबके विवरण इस अध्याय में प्रस्तुत किये जाएंगे। चतुर्थ अध्याय इनके राजनीतिक संघर्षों पर आधारित होगा। पंचम अध्याय में झारखण्ड आन्दोलन में उनकी भूमिका और महत्व पर विचार किया जाएगा। उपसंहार में इनके अलग झारखण्ड राज्य संबंधी विचारों की चर्चा होगी और इसकी पड़ताल की जाएगी कि जिस झारखंड की कल्पना उनके मन में थी, अलग राज्य के रूप में निर्मित होने के बाद वह कहाँ तक यथार्थ में परिणत हो सकी। अंत में विवरणिका होगी जिसमें आधार ग्रंथों, सहायक ग्रंथों एवं पत्र–पत्रिकाओं की सूची होगी।

अध्यायीकरण :

प्रस्तावना :

क) शोध—समस्या

ख) शोध का उद्देश्य

ग) शोध—परिकल्पना

घ) उपलब्ध साहित्य की समीक्षा

ङ) शोध—पद्धति

प्रथम अध्याय : झारखण्ड की ऐतिहासिकता का परिचय

क) नामकरण एवं प्रदेश के रूप में इसकी ऐतिहासिकता

ख) पौराणिक विवरण

ग) जातियों का परिचय एवं उनकी पौराणिकता

द्वितीय अध्याय : बिनोद बिहारी महतो का जीवन—परिचय

क) जन्म एवं परिवार संबंधी विवरण

ख) शिक्षा—दीक्षा एवं रोजगार

ग) सामाजिक—सांस्कृतिक एवं राजनीतिक चिंतन

तृतीय अध्याय : बिनोद बिहारी महतो का सामाजिक—सांस्कृतिक संघर्ष

क) समाज—सुधार के लिए संघर्ष

ख) शिक्षा के प्रसार के लिए कृत कार्य

ग) कुप्रथाओं एवं आडंबरों के विरुद्ध संघर्ष

चतुर्थ अध्याय : बिनोद बिहारी महतो का राजनीतिक संघर्ष

क) जमींदारों—महाजनों के खिलाफ विद्रोह

ख) विस्थापन की समस्या के विरुद्ध संघर्ष

ग) मजदूर आन्दोलन में भागीदारी

पंचम अध्याय : झारखंड आन्दोलन में बिनोद बिहारी महतो की भूमिका

क) आजसू (ऑल झारखण्ड स्टूडेंट यूनियन) का गठन

ख) झारखण्ड मुक्ति मोर्चा के आन्दोलन में सक्रियता

ग) झारखण्ड समन्वय समिति का निर्माण

उपसंहार : अलग झारखण्ड राज्य के बारे में बिनोद बिहारी महतो के विचार

परिशिष्ट : सन्दर्भ ग्रन्थ, पत्र–पत्रिकाएं एवं अन्य सामग्री